

## पद्मपुराण में नारियों की स्थिति

डॉ. कृष्णा कुमार

व्याख्याता, संस्कृत विभाग,

एस.जे.एस कॉलेज, कुर्था, अरवल, बिहार, भारत।

वेद एवं पुराण भारतीय मनीषा की सारस्वत साधना के चरमोत्कर्ष के प्रतीक है। अनादि, अपौरुषेय नित्य—वेद जिस प्रकार तपः पूत अन्तः करण में प्रोद्भासित हुए थे, उसी प्रकार पुराण भी अतीतानागत—विप्रकृष्ट ततें के साक्षात्कर्ता विज्ञानियों द्वारा ग्रहण किये गए थे। स्रष्टा ने विश्व—सृष्टि का पूर्व परिचय प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम पुराण का स्मरण किया था—

“पुराण सर्वशास्त्राणां प्रथम ब्रह्मणां स्मृतम् ।”

वेदार्थ का उपबृह्मण करने के कारण पुराण वेद के व्याख्याता हैं। अतः पुराणों की वेदमूलकता स्वयं सिद्ध है। सृष्टि विज्ञान और मानवता के इतिहास का प्रतिनिधित्व करने वाले पुराण लोकवृत्तानुगामी होने के कारण चिर—पुराण एवं चिर—नवीन है। शाश्वत जीवनक्रम तथा सृष्टि उद्भव एवं विकास से सम्बद्ध विपुल ज्ञान के निधानभूत पुराण भारतीयों के लिए सदा से प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। अतः पुराणों का अध्ययन, मनन और चिन्तन वर्तमान समय में भी आवश्यक है।

प्राचीन भारतीय समाज का स्वरूप पुराणों में प्रतिबिम्बित होता है। वर्ण, आश्रम, संस्कार, विवाह इत्यादि एवं सामाजिक संस्था के रूप में मान्य हैं। प्राचीन समाज इन्हीं संस्थाओं पर प्रतिष्ठित रहा है। इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुए पद्मपुराण के साक्ष्य पर समाज में नारियों की स्थिति का आकलन किया गया है।

पद्मपुराण में नारी की प्रतिष्ठा एवं धार्मिक तथा सामाजिक जीवन में उसके महत्व के विषय में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। नारी के विषय में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। नारी के विषय में इस पुराण में दो तरह की परस्पर विरुद्ध विचारधारा का दर्शन होता है। एकतः सांसारिक जीवन यात्रा की सफलता में नारी को प्रधान हेतु मानकर उसकी महत्ता का प्रतिपादन किया गया है। अपरतः आध्यात्मिक अभ्युन्नति के मार्ग में नारी को बाधा स्वरूप मानकर उससे विरत रहने का उपदेश दिया गया है। तुलनात्मक दृष्टि से विचार करने पर नारी विषयक प्रशंसावचनों का आधिक्य दिखाई पड़ता है। संसार से सर्वथा विरक्त होकर साधना में रत रहने वाले व्यक्ति के लिए निश्चय ही नारी संसर्ग पतन का कारण हो सकता है किन्तु सांसारिक सुख—दुःख के बीच रहकर जीवन—यापन करते हुए निहित क्रियाओं के अनुष्ठानपूर्वक त्रिवर्ग साधन करने वाले गृहस्थ के लिए नारी का महत्व सर्वोपरि है। इस दृष्टि से भी नारी के शील स्वभावानुसार दो रूप बताए गए हैं— साध्वी और दृष्टा पहली तो कुल का उद्घार करने वाली होती है और दूसरी पतन करने वाली।<sup>1</sup> इसीलिए कहा गया है कि स्वर्ग, कुल, यश, अयश, पुत्र, दुहितृ, मित्र इत्यादि नारी के अधीन है।<sup>2</sup> स्पष्टतः इस कथन से नारी की प्रतिष्ठा का परिज्ञान होता है।

पारिवारिक जीवन में नारी के तीन रूप विशेष महत्वपूर्ण हैं— कन्या, पत्नी और माता। पुराण में इन तीनों धार्मिक और सामाजिक महत्व का विवेचन हुआ है। कन्या के रूप में उसका गौरव इसलिए बढ़ा हुआ था कि विधि-पूर्वक योग्य वर के लिए उसका दान कर अन्नत पुण्य अर्जित किया जा सकता था। पुत्र की तुलना में कन्या-जन्म की हीनता का साधक कोई भी प्रमाण इस पुराण में दृष्टिगत नहीं होता। बल्कि ऐसे प्रसंग मिलते हैं जिनसे कन्या के प्रति माता-पिता का अतिशय स्नेह और सद्भाव सूचित होता है। स्नेहाधिक्य के कारण विवाह के पश्चात् भी जामाता के सहित कन्या को अपने घर में रखने की परम्परा थी। यद्यपि इसका परिणाम अच्छा नहीं होता था।<sup>4</sup> क्योंकि कन्या के आचरण और शील के प्रति माता-पिता को चिन्ता बनी रहती थी। इस प्रसंग में ऐसी कई घटनाएँ पुराण में वर्णित हैं जो कन्या के पथच्यूत होने की पृष्ठि करती हैं<sup>5</sup> कुछ ऐसे ही कारणों से पुत्र का जन्म कन्या की अपेक्षा अधिक स्पृहणीय था। तथापि उसका कारण पर्याप्त समादर पितृ-कुल में होता था। विवाह के पश्चात् पति के घर जाने पर भी कन्या के सुख-दुःख की चिन्ता माता-पिता को बनी रहती थी।<sup>6</sup>

भार्या के रूप में नारी की महत्ता का परिचायक सर्वोत्कृष्ट प्रमाण है— तीर्थ के रूप में भार्या की सामाजिक स्वीकृति। पद्म पुराण का सुकला-चरित प्राचीन भारतीय समाज में नारी के समादर और धार्मिक दृष्टि से उसके माहात्म्य का प्रकाशन करता है। नारी (पत्नी) के अभाव में पुरुष की अकेले की गयी सभी क्रियाएँ और धर्माचरण किस प्रकार निष्फल होते हैं? उक्त आख्यान इसका जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।<sup>7</sup> कृकल नामक वैश्य अपनी सती—साध्वी पत्नी सुकला को घर पर छोड़कर अकेले पवित्र तीर्थों की यात्रा किया था। इस अपराध के कारण उसे पुण्य के बदले पाप का भागी होना पड़ा था। उसके द्वारा दिए गए श्राद्धान्न का भक्षण करने के लिए उसके पितृ गण भी बन्धन मुक्त हो गए थे।<sup>8</sup> इससे मुक्ति तब मिली जब उसने धर्मराज की आज्ञानुसार पत्नी सहित तीर्थों का पूजन और पितरों का श्राद्ध किया।<sup>9</sup> भार्या के रूप में नारी की स्थिति के ज्ञापक उपर्युक्त प्रसंग के कुछ महत्वपूर्ण श्लोक अधोलिखित हैं—

एवं यो भार्यया हीनस्तस्त्र गेहं वनायते ।

यज्ञाश्चैव न सिध्यन्ति दानानि विविधानि च ॥

भार्याहीनस्य पुंसोऽपि न सिध्यति महावतम् ।

धर्मकर्माणि सर्वाणि पुण्यानी विविधानि च ॥

नास्ति भज्ञार्यासमं तीर्थं धर्मसाधनं हेतवे ।

शृणुष्व त्वं गृहस्थस्य नान्यो धर्मो जगत्त्रये ।

यत्रभार्या गृहं तत्र पुरुषस्मापि नान्यथा ।

ग्रामेवाऽप्यथवाडरण्ये सर्वधर्मस्य साधनम् ॥

नास्ति भार्यासमं तीर्थं नास्ति भार्यासमं सुखम् ।

नास्ति भार्यासमं पुण्यं तारणाय हिताय च ॥

तस्मादभार्या बिना धर्मः पुरुषाणां न सिध्यति ।

भार्या नि हियो धर्मः स एवं विपुलो भवति ॥<sup>10</sup>

उक्त पद्यों में जहाँ नारी के अधिकार और पुरुष के जीवन में उसके महत्व का बोध कराया गया है, वहीं नारी के कर्तव्य का भी संकेत किया गया है। नारी का यह महत्व उसी स्थिति में संभव था जबकि वह भी पति के प्रति अपने धर्म और कर्तव्य का सम्यक् पालन करती हो। इसी धर्म को पतिव्रत्य कहा गया है और इसका अनुष्ठान करने वाली नारी को पतिव्रता।<sup>11</sup>

पति के निकट रहकर निरन्तर मनसा, वाचा, कर्मणा उनकी सेवा करना और अपने आचरण तथा व्यवहार से उसे सर्वदा प्रसन्न रखना नारी का परम कर्तव्य बताया गया है।<sup>12</sup> पति जिस किसी भी स्थिति में हो उसकी उपेक्षा या त्याग नारी के लिए वर्जित है।<sup>13</sup> पति से बढ़कर नारी के लिए कोई अन्य गुरु, पूण्य अथवा देवता नहीं है— पति उसके लिए सब कुछ है।<sup>14</sup> पति के तुष्ट हो जान पर सभी देवता, ऋषि और मनुष्य सन्तुष्ट होते हैं।<sup>15</sup> एकमात्र पति के अराधना से ही नारी को सुख, सौभाग्य, वस्त्रालंकार, यश तथा अन्य आध्यात्मिक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। अतः पति के विद्यमान रहने पर नारी के लिए लिए अन्य धर्म भी कोई अपेक्षा नहीं है। अन्य धर्म का आश्रयण करने पर सम्पूर्ण कृत्य निष्फल हो जाते हैं और संसार में वह पुंश्चली ही जाती है।<sup>16</sup> पुराण का कथन है कि नारी का रूप, यौवन और भूमण्डल पर उसका अवतरण पति के लिए होता है। अतः पति के प्रति अर्पित हो जाने में ही उसके जीवन, रूप और यौवन की सार्थकता है। महाकवि कालिदास के अनुसार ववह रूप सम्पदा व्यर्थ जो प्रिय को आकृष्ट न कर सके। उसके मन को रिज्ञा न सके। नारी के सौन्दर्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है— प्रियतम के असीम स्नेह की प्राप्ति। सम्भवतः इसीलिए पुराण का निर्देश है कि पति से पृथक रहने पर पतिव्रता को श्रृंगार—रचना, आभूषण धारण तथा अन्य साज सज्जा का परित्याग करना चाहिए। पति की अनुपस्थिति में अपने शरीर एवं रूप को किसी भी तरह से मण्डित करने का उपक्रम करने वाली नारी अपने धर्म से च्युत हो जाती है।<sup>17</sup> सामान्य रूप से तो पति को छोड़कर अन्यत्र आ सकती है। अतएव पति के समीप रहने की प्रेरणा दी गयी है।<sup>18</sup> इसके विरुद्ध आचरा करने पर प्राप्त होने वाले कुपरिणाम का बोध कराने के लिए मथुरा नरेश उग्रसेन की पत्नी पद्मावती का आख्यान पद्मपुराण में वर्णित है।<sup>19</sup>

पतिव्रता की विशेष प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि जैसे नदियों में गंगा, मनुष्यों में राजा और देवों में भगवान् विष्णु श्रेष्ठ हैं वैसे ही स्त्रियों में पतिव्रता श्रेष्ठ हैं—

**नदीनां जाह्नवीं श्रेष्ठा प्रमदानां पतिव्रता।**

**मनुष्याणां प्रजापालो देवनां च जनादैनः ॥ पद्म सृष्टि – 47 / 50**

यहाँ गंगा की उपमा से पतिव्रता में निरतिशय पवित्रता, राजा की उपमा से सामर्थ्य और विष्णु की उपमा से देवत्व तथा पूज्यता की व्यंजना होती है। पति के हित—साधन में नित्य निरत रहने वाली नारी पति एवं पितृकुल के सैकड़ों पुरुषों का उद्धार करती है। अन्त में स्वर्ग—सुख का अनुभव कर अनेक जन्म तक राज—पत्नी के रूप में सांसारिक सुखों के भोग से संतुष्ट होकर मोक्ष को प्राप्त करती है। पद्मपुराण में एक ऐसी पतिव्रता नारी का उल्लेख मिलता है जिसने पति—सेवा के ल पर प्रत्यक्ष परोक्ष अतीतानागत सभी घटनाओं और वस्तुओं का ज्ञान रखती थी।<sup>20</sup> पतिव्रता के अद्भूत सामर्थ्य रखने वाली ब्राह्मणी सैव्या की कहानी प्रसिद्ध है। इस पतिव्रता ने कुछ रोगग्रस्त अपने पति की

कामेच्छापूर्ति हेतु वेश्या की सेवा कर उसे प्रसन्न किया। पुराण का कथन है कि पतिपरायण, निरन्तर पति के हित साधन में तत्पर रहने वाली पतिव्रता देवों और ब्रह्मवादी मुनियों की भी आराध्या है –

पतिप्रता पतिप्राणा सदा पत्युहितेरता ।

देवानामपि साऽऽराध्या मुनीनां ब्रह्मवादिनाम् ॥ वही, सृष्टि 48/5

कन्या और पत्नी के पश्चात् पुराण में माता के रूप में नारी का दर्शन होता है। मातृत्व नारी जीवन की चरम परिणति है। इसके अभाव में मानो स्त्रीत्व व्यर्थ है। सन्तानोत्पादन द्वारा पितृ-ऋण से मुक्ति विवाह का परम लक्ष्य थी। अतः संतान उत्पन्न करने में जो नारी समर्थ न थी, उसका परिवार और समाज में अपेक्षित आदर नहीं होता था। स्वयं नारी समाज को मातृत्व के आभाव में अपने भीतर आत्महीनता की अनुभूति प्रत्यक्ष है। महाभारतीय समाज में भी माता के रूप में नारी को सर्वोच्च स्थान दिया गया था।

नास्तित्वं मातृसमा छाया नास्ति मातृसभा गतिः ।

नास्ति मातृसमं त्राणं नास्ति मातृसमः प्रियः ॥ महाभारतय रात्रि 258 / 25-29

यज्ञ, तीर्थ दान तथा अन्य विविध पुण्यकर्मों का फल माता-पिता की सेवा मात्र से प्राप्त हो सकता है। पुत्र के लिए माता-पिता से बढ़कर कोई तीर्थ नहीं है, ये दोनों इहलोक और परलोक में भी नारायण के समान हैं –

नास्ति मातुः परंतीर्थं पुत्राणां च पितुस्तथा ।

नारायण से भावेवाविह, चैव परत्र च ॥ पदम् भूमि. 63 / 13

माता-पिता की सेवा न करने वाले व्यक्ति का वेदाध्ययन, यज्ञ, दान और पूजन सभी व्यर्थ हो जाते हैं।<sup>21</sup> महाभारत में युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए भीष्म का कथन है— “आचार्य दश क्षेत्रियों से श्रेष्ठ है, दश आचार्यों से उपाध्याय, दश उपाध्यायों से पिता और पिता से भी दशगुणा माता है। माता समस्त पृथ्वी को भी अकेली अपनी गुरुता से अभिभूत कर सकती है। अतः माता से बढ़कर कोई गुरु पूज्य नहीं है।”<sup>22</sup>

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्राचीन समय में भी नारियों का स्थान सर्वोच्च था तथा सभ्य व सुसंगठित समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

## सन्दर्भ सूची

1. साध्वी तारयते वंशान् दुष्टा पातयते ध्रुवम्। पदम्, सृष्टि 49 / 31
2. दारेष्वधीनं स्वर्गं च कुलं पंक्यशोऽयशः। पुत्रं दुहितरं मित्रं संसारे कथयन्ति च ॥ वही सृष्टि 49 / 32
3. पदम् 0 भूमि 0 – 47 / 12-23, वही भूमि 49 / 11, 12
4. वही भूमि 47 / 31-46
5. वही भूमि 30 47 तथा 30 49, 50
6. पदम्, उत्तर, 232 / 66-75
7. वही भूमि 30 53-60
8. पदम् भूमि 30 59

9. वही भूमि 60 / 2–11
10. पद्म भूमि 59 / 20–24, 33
11. पद्म भूमि 50 / 21–23
12. वही भूमि 41 / 10–17
13. रोगी जडो दरिद्रो वा नेत्राभ्यांवर्जितोऽपि वा । न्लाज्यः स्वपतिः स्त्रीमिरच्छन्तीभिस्तु सद्गतिम् ॥ पद्म उत्तर 202 / 60  
तथा पद भूमि० 50 / 30
14. कस्या माता पिता भ्राता कस्या स्वजनबान्धवा । सर्वस्थनेप—तिहर्योको भार्यायास्तु न संशयः । पद्म भूमि० 50,54
15. तुष्टे भर्त्तरितस्यास्तु तुष्टास्युः सर्वदेवताः । तुष्टे भर्त्तरि तुष्ट्यन्ति ऋषयो देव मानवाः ॥ पद्म भूमि० 41 / 74
16. पद्म भूमि० 41 / 63–69
17. वही भूमि० 41 / 70
18. पद्म भूमि० 41 / 76–79
19. वही भूमि० 50 / 39–46, 52–53
20. वही भूमि० 30 48–51
21. वही सृष्टि 47 / 51–53
22. वही सृष्टि 47 / 64–72